अध्याय
10

उपनिवेशवाद और देहात

सरकारी अभिलेखों का

सीखने के प्रतिफल

इस अध्याय में हम जान सकेंगे कि किस प्रकार मध्यकाल में तकनीकी विकास एवं व्यापार में वृद्धि और उपनिवेशवाद का विकास हुआ जान सकेंगे।

पुनर्जागरण के उपरांत जो भौगोलिक खोजें आरंभ हुई उसमें महत्वपूर्ण था समुद्री यात्रा की खोज।

इस महत्वपूर्ण खोज ने यूरोपीय देशों का व्यापार विश्व के अन्य क्षेत्रों से जोड़ दिया। इसी क्रम में यूरोपीय व्यापारी वास्कोडिगामा सर्वप्रथम 1498 ईसवी में भारत के कालीकट बंदरगाह पर पहुंचा। अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 31 दिसंबर 1600को हुई थी। जो1608 इस वीं में कैप्टन हॉकिंस के नेतृत्व में भारत में व्यापार करने के लिए आगराआया और यहीं से भारत और इंग्लैंड के बीच व्यापारिक गतिविधियां शुरू हुई। जो आगे चलकर उपनिवेशवाद में परिवर्तित हो गए।

सर्वप्रथम 1510 ईसवी में अल्बुकर्क ने गोवा पर अधिकार कर लिया। भारत में उपनिवेशवाद की प्रक्रिया तृत्तीय प्लासी युद्ध जो 23 जून 1757 को लड़ा गया था वहीं से शुरू हुई।

भू-राजस्व व्यवस्था

1627 ईसवी तक ईस्ट इंडिया कंपनी का विस्तार।

सूरत।

भरूच।

अहमदाबाद।

मछलीपट्टनम।

आगरा।

16 51 ई० तक स्थापित ईस्ट इंडिया कंपनी की फैक्ट्रियां।

हुगली।

पटना।

बाला शोर।

ढाका।

बंगाल बिहार सीमा।

© JCERT not to be republished

प्लासी युद्ध के बाद अंग्रेजों ने भारत में तीन प्रकार की भू -राजस्व व्यवस्था लागू की

- कंपनी की भू राजस्व व्यवस्था।
- स्थाई बंदोबस्त (लार्ड कॉर्नवालिस) 1793 ई० या व्यवस्था बना उत्तरी कर्नाटक, बिहार बंगाल, उड़ीसा एवं उत्तर प्रदेश में लागू था जो ब्रिटिश प्रशासन क्षेत्र का लगभग 19% था।
- रैयतवाड़ी व्यवस्था (टॉमस मुनटो) 1792 ई० में लागू की गई असम मद्रास बॉम्बे आदि क्षेत्रों में लागू की गई यह लगभग 51% भाग में लागू थी।
- महालवाड़ी व्यवस्था (विलियम बेंटिक) 1833 ई० में लागू की गई। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा पंजाब के क्षेत्रों में लागू था। यह कुल क्षेत्रफल का लगभग 30% भाग में लागू था।

भू राजस्व व्यवस्था लागू किए जाने के उपरांत किसानों पर पड़ने वाला प्रभाव-

लगभग 75% जमींदारों की जमींदारी समाप्त हो गई। किसानों को जमींदारों की दशा पर छोड़ दिया गया। किसान जमीन पर मजदूर बनकर रह गया। किसानों के पास अपनी जमीन बेचने का अधिकार नहीं था। लगान की दर बहुत ऊंची थी। किसान दिनों-दिन बहुत गरीब होते चले गए। लगान नहीं चुकाने पर जमीन नीलाम कर दी जाती थी।

जमींदारों पर नियंत्रण

सैन्य टुकड़ी बन कर दी गई। अस्थाई पुलिस को खत्म कर दिया गया। जमींदारों की न्याय व्यवस्था कलेक्टर के अधीन कर दिया गया। कर नहीं चुकाने पर जमींदारों की जमीन की नीलामी कर दी जाती थी।

पांचवीं सरकारी रिपोर्ट की मुख्य बातें-

1. भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी केअधिकार को ब्रिटेन में विरोध किया गया।
2. निजी व्यापारियों का भारतीय बाजारों के प्रति आकर्षण। कंपनी पर कुशासन एवं भ्रष्टाचार का आरोप लगा। 1773 रेगुलेटिंग एक्ट की स्थापना हुई तथा कंपनी को नियमित रूप से रिपोर्ट भेजने के लिए कहा गया।

नोट-

1792 ईसवी में रैयतवाड़ी बंदोबस्त मद्रास प्रेसिडेंसी के बार महाल जिले में सर्वप्रथम लागू किया गया। रैयतवाड़ी बंदोबस्त उन क्षेत्रों में लागू हुआ जहां भू सर्वेक्षण नहीं हुआ था। मुंबई में भू सर्वे 1824 से 28 के बीच पिंगल नमक अधिकारी ने किया था 1818 ईसवी में एलीफेंट मुनरो ने पेशवा राज्यों में पहली बार महालवाड़ी व्यवस्था लागू किया।

पहाड़ी लोगों का जीवन

झूम खेती करते थे। जंगल का उपज अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार था। पशुपालन एवं जंगली उत्पाद से अपना जीवन यापन करते थे। यह लोग ज्वार बाजरा दाल अलसी एवं कई प्रकार की फसलों को उप जाते थे। पशुओं में गाय भैंस सूअर मुर्गी बकरी कुत्ता आदि उसके पालतू पशु है तथा यह सभी साथ मिलकर जंगल में एक टोली के साथ रहते थे। जंगली उत्पाद कंद मूल फल जलावन की लकड़ी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था।

फ्रांसिस बुकानन का रिपोर्ट

फ्रांसिस बुकानन एक अंग्रेज चिकित्सक थे 1800 ईसवीं मैं पुर्तगालियों ने कब गोवा पर अधिकार किया था लॉर्ड वेलेजली की सेवा में थे। उन्होंने मैसूर, कैनरा, मालाबार तट मे भू-सर्वे किया तथा नेपाल के राजा के बारे में भी

© JCERT not to be republished

लिखा। कोलकाता में एक चिड़ियाघर स्थापित किया। और वनस्पति विज्ञान के प्रभारी भी रहे। उन्होंने कोलकाता में भू -सर्वेक्षण किया। प्रतियोगिता परीक्षा के तैयारी के लिए उन्होंने कोलकाता में वेलेजली के सहयोग से फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना करवाई।

संथाल विद्रोह-

संथाल का मुख्य निवास स्थान दामिनी-ई-कोह था। जब सरकारी अधिकारियों, जमींदारों, व्यापारी और साहूकारों इत्यादि लोगों का अत्याचार संथाल समुदाय पर होने लगा तो यह लोग विद्रोह के लिए तैयार हो गए। इसके नेता सिद्धू एवं कानु थे। 1855-56ईस वीं में लड़ा गया। ये अपने परंपरागत हथियारों से जैसे तीर कमान, भाला, कुल्हाड़ी इत्यादि लेकर लड़े थे। विद्रोह 30 जून 1855 ईसवी को शुरू हुआ जो दिसंबर 1856 तक चला। विद्रोह के शिकार व्यापारी, साहूकार, जमींदार, अंग्रेज लोग थे। इस विद्रोह में लगभग 50000 संथाल शहीद हुए थे। विद्रोह के परिणाम स्वरूप भूमि को वापस कर दी गई। संथाल परगना टेनेंसी एक्ट पारित कर स्वायत्तता प्रदान कर दी गई।

(दक्कन विद्रोह)

12 मई 18 75 ईसवी को पुणे जिले के सपा नामक स्थान से किसानों ने जमींदारों और साहूकारों के विरुद्ध विद्रोह किया था।

किसानों ने साहूकारों एवं जमींदारों के लेखा खाता एवं घर जला दिए तथा सारी संपत्ति लूट ली।

विद्रोह के उपरांत सरकार ने 1875 ईसवी में दक्कन दंगा आयोग का गठन किया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. पुर्तगालियों ने कब गोवा पर अधिकार किया था?

   a. 1510 b. 1600

   c. 1608 d.1498

2. पुर्तगालियों ने मुंबई द् वींप को अंग्रेजों को कब दिया?

   a. 1510 b. 1522

   c. 1608 d. 1622

3. स्थाई बंदोबस्त कब लागू किया गया था?

   a. 1893 b. 1993

   c. 1793 d. 1608

4. संथाल विद्रोह कब हुआ था?

   a. 1855 b. 1655

   c. 1632 d. 1603

5. रैयतवाड़ी बंदोबस्त कब लागू किया गया?

   a. 1793 b. 1792

   c. 1773 d. 1795

लघु उत्तरीय प्रश्न

1- ईस्ट इंडिया कंपनी ने किस प्रकार जमींदारों पर नियंत्रण स्थापित किया?

2- सूर्यास्त विधि से क्या तात्पर्य है?

3- स्थाई बंदोबस्त के प्रावधानों का वर्णन कीजिए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1- ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा लागू किए गए भू राजस्व व्यवस्था का वर्णन कीजिए?

2- संथाल विद्रोह के कारणों एवं परिणामों का वर्णन कीजिए?

© NCERT not to be republished